एक, दो, तीन ...

शहद बहुत मीठा फूलों का
पर काटें मधु-मक्षिकायें
वह क्यों पीड़ा से घबराये
जब मधु खाने को ललचाये !

हरी घास में गुबरैले ने भिन भिन की
टिड्डे ने भी फ़ौरन तभी कमानी ली।
कितना है संगीत हमारे चारों ओर!
धा-धीं-धिन्ना, धा-धी-धिन्ना सन्ध्या-भोर!

मेढकियां ये
वन-जंगल के सिरे-सिरे
चलीं-चलीं।
चलते-चलते
पकी बेरियां उन्हें मिलीं।
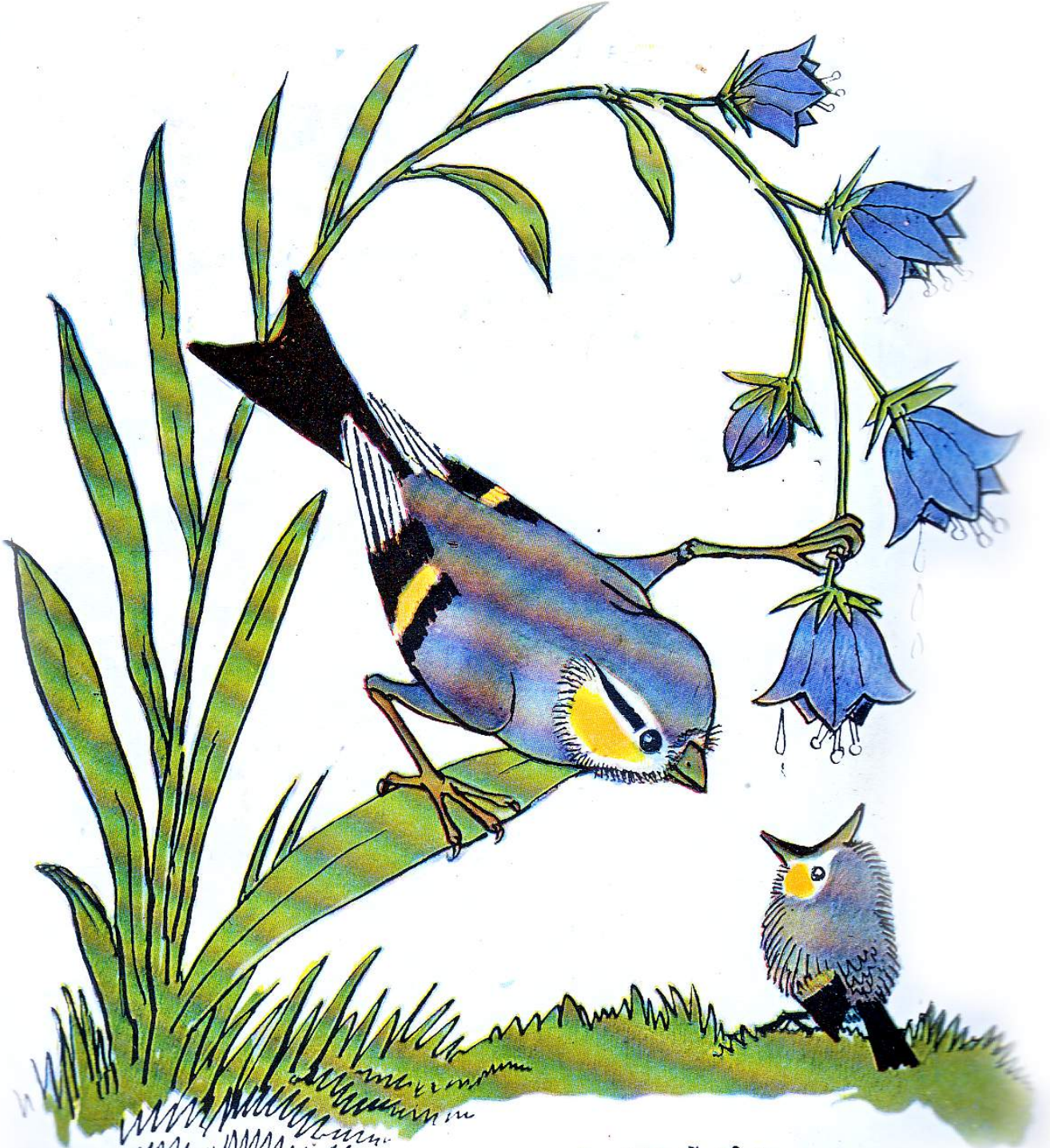
अच्छा है जंगल में जीना
सुबह-सवेरे शबनम पीना।
बस थोड़ा-सा फूल झुकाओ
शबनम पीकर प्यास बुझाओ!

आया पवन झकोरा आया
फूल घास में हिला-हिलाया।
हुई हवा की सर सर सर
गये सभी ये खरहे डर।
देखो, कैसे कान उठाये
डरे हुए, दीदे फैलाये।
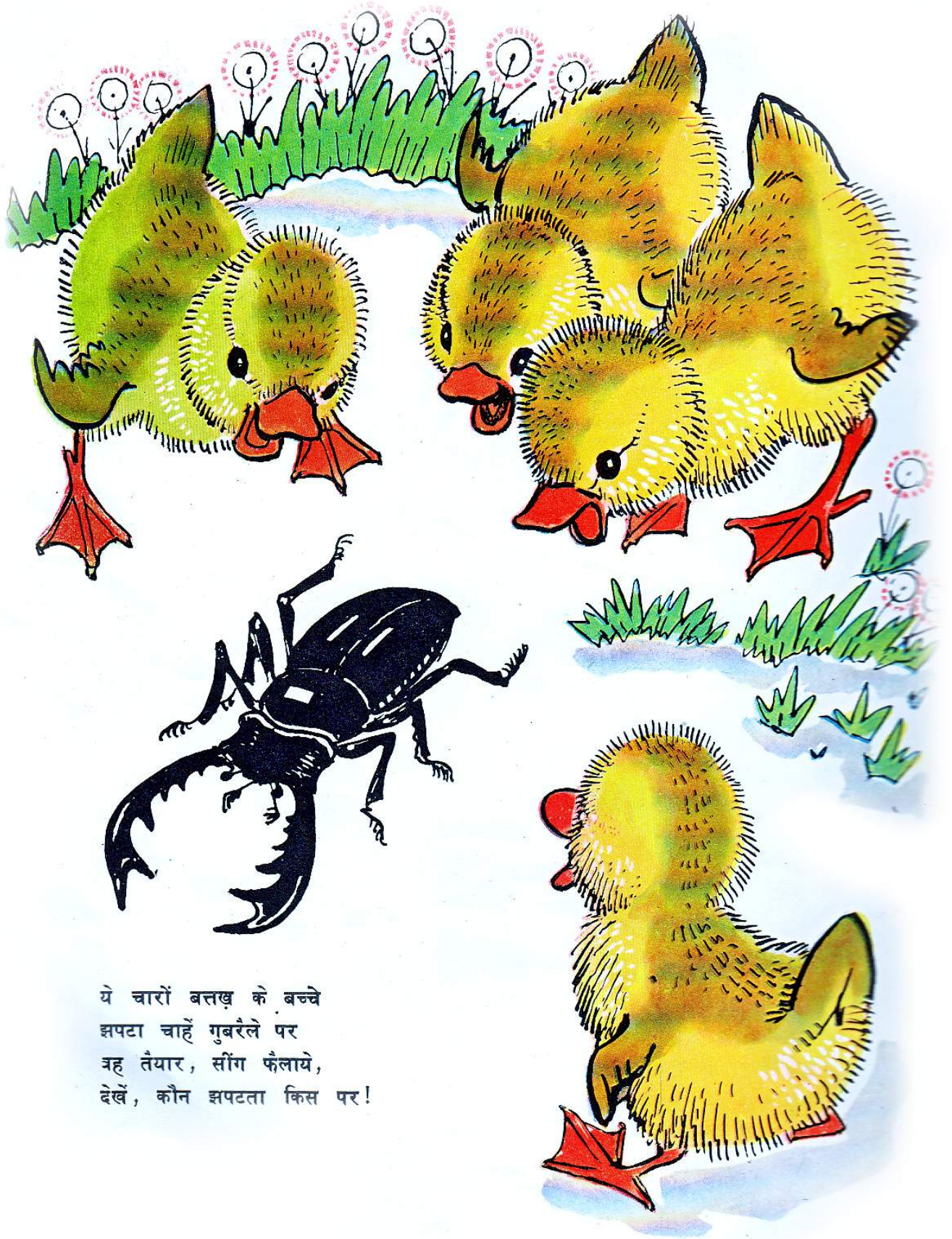
ये चारों बत्तख़ के बच्चे
झपटा चाहें गुबरैले पर
वह तैयार, सींग फैलाये,
देखें, कौन झपटता किस पर!

बेशक रोयोंवाला तन
किन्तु चुका मैं मुर्ग़ा बन।
बेशक मैंने सांप न मारा
पर मैं जीता, औ' यह हारा।

कौवे के बच्चे के ऊपर
हेलीकाप्टर करता घर-घर।
पर वह बैठा है मुंह बाये
शायद मुंह में मक्खी आये।

चिड़ियों के बच्चे आपस में उलझ पड़े
बेमतलब ही वे लड़कों सम लड़े-भिड़े।
पर कुछ क्षण में बन्द हुई हाथापाई
अपनी मूर्खता पर उन्हें, हंसी आई।

देखो तो बैठा है मछुआ
पर उदास होता है मछुआ
वह तो मछली पाना चाहे
मगर केकड़ा फंसता जाये,
मछली उसको नजर न आये।

टोपीवाला छत्रक सुन्दर
यह ही छतरी, यह ही घर।
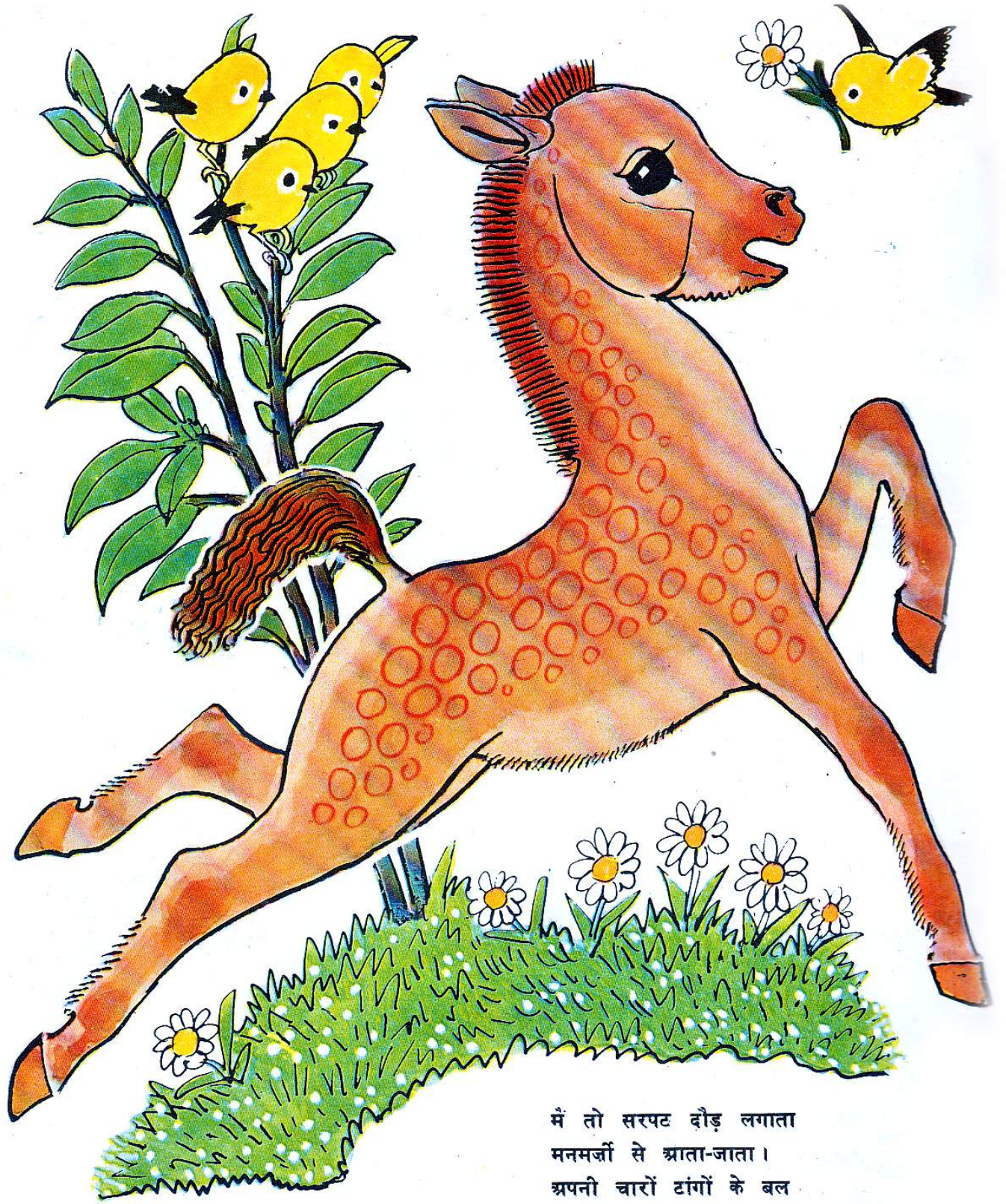
मैं तो सरपट दौड़ लगाता
मनमर्ज़ी से आता-जाता।
अपनी चारों टांगों के बल
मैं तो जैसे पक्षी चंचल।
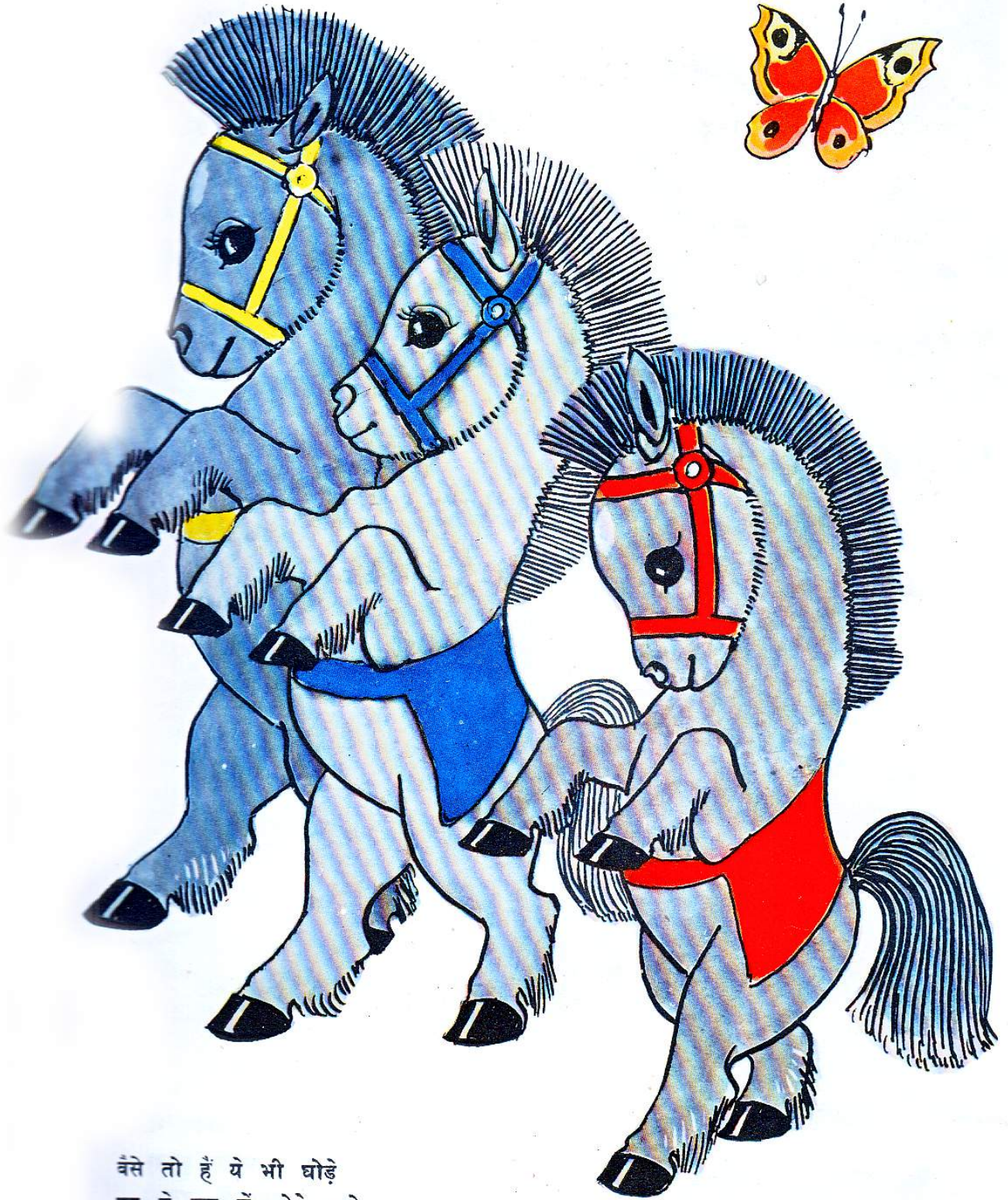
वैसे तो हैं ये भी घोड़े
पर ये क़द में छोटे रहते
इसी लिये तो इनको हम सब,
टट्टू कहते।

बत्तख़ के बच्चे आपस में
बांट रहे हैं अपना खाना
कांटे-छुरी नहीं हैं, इनको
ढंग यही पड़ता अपनाना।

हम दो छोटे-छोटे बकरे
सींग निकलते आते हैं
हम तो भाई, शत्रु नहीं, पर
फिर भी हम भिड़ जाते हैं।

अनुवादक : मदन लाल 'मधु'

АЛЕКСЕЙ МИХАЙЛОВИЧ ЛАПТЕВ
РАЗ, ДВА, ТРИ
На языке хинди

प्रगति प्रकाशन
मास्को